The International Journal of Advanced Research In Multidisciplinary Sciences
(IJARMS)
Volume 2 Issue 1, 2019

दक्षिण भारत में जातिवाद और दाहसंस्कार क्रियाः एक समाजशास्त्रीय अवलोकन

Mk- reUuk
समाजशास्त्र विभाग,
पं.दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय
राजाजीपुरम, लखनऊ।

यह तथ्य किसी से छिपा नही है कि भारतीय सामाजिक संरचना के प्रमुख आधारों में जाति व्यवस्था प्रमुख रही है हम भले ही विज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र मे, शिक्षा के क्षेत्र में एक लम्बी छलांग लगा चुके हों, हमारे विकास के तमाम प्रतिमानों ने पुरानी जड़वत परम्पराओं को ध्वस्त कर दिया हो, इसके बावजूद भी जातिवाद के अभिशाप से हमारा समाज अभी भी अभिशप्त है। इस अभिशाप से एक लम्बी लड़ाई लड़े जाने की जरूरत है और यह लड़ाई किसी व्यक्ति विशेश, जाति विशेश, क्षेत्र विशेश, धर्म विशेश के लोगों द्वारा नही लड़ी जा सकती है और न ही जीती जा सकती है। वास्तव में इसके लिए समेकित रूप से पहल की आवश्यकता है। बगैर संयुक्त पहल और प्रयास के जातिवाद जैसी नकारात्मक सामाजिक वैचारिकी को बदला नही जा सकता, जाति के आवरण से समाज को मुक्त करके ही प्रगतिशील, विकासशील समाज के सपने को साकार किया जा सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन दक्षिण भारत के एक गांव रामपुरा का लेखक के द्वारा अवलोकन और साक्षात्कार पद्धति पर आधारित है। उपर्युक्त अवलोकन कर्नाटका राज्य के मैसूर ष्ाहर से लगभग 35 किमी. दूर स्थित रामपुरा गांव में एक अल्पकालिक प्रवास पर आधारित है। रामपुरा गांव की सम्पूर्ण आबादी लगभग 5000 है। जो पांच मजरों में विभक्त है आज रामपुरा गांव सिद्धरमैया (कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री) के गांव के समीप देश के ग्रामीण इलाकों मे विकास का एक मॉडल प्रस्तुत करता है। जहां पर लिंगायत (प्रभुजाति), गौड़ा (पिछड़ी जाति) तथा नायका (जनजाति) के लोग मुख्य रूप से निवास कर रहें हैं विद्युत, पानी, स्वास्थ्य, सड़क इत्यादि से युक्त गांव नारियल के बागानों से आच्छादित सुरम्य प्राकृतिक वातावरण से ओत प्रोत है। (ग्रामीणों की रोजगार का मुख्य आधार भी नारियल है) वाह्य ग्रामीण संरचना (भौतिक संसाधन) अत्यन्त आधुनिक भौतिक सुखसुविधाओं से युक्त तो है परन्तु विकास की दृश्टि से देखा जाए तो विश्वास करना अत्यन्त दुरूह होगा कि जो तालाब पानी से लबालब बाहर से ष्ाान्त दिख रहा है उसके अन्दर जातिवादी हलचल अपने चरम पर है, क्योंकि जब मैंने एक गौड़ा जाति (जो वहां की

पिछड़ी जाति है) और एक नायका युवक (जनजाति) के साथ गांव की लिंगायत बस्ती (जो मुझे अपनी स्वच्छ वातावरण के लिए विशेश तौर से आकर्शित कर रही थी) की फोटोग्राफी करनी चाही तो गौड़ा युवक तो साहस जुटाकर कुछ न बोला परन्तु नायका युवक डर व्यक्त करते हुए मुझे लिंगायतों की बस्ती की फोटोग्राफी करने से इसलिए मना कर दिया कि वे लोग देख लेगें तो मेरे लिए परेशानी खड़ी हो सकती है। यह प्रसंग इस बात का सूचक है कि आज भी कोई हिन्दू निम्न जाति का व्यक्ति किसी अजनबी को भी भय वश लिंगायतों की बस्ती की तस्वीरे लेने से भी रोकने को मजबूर होता है। जातिय दूरी और द्विज जातियों का प्रभाव ऐसे सामान्य मुद्दों पर भी देखा जा सकता है जिसका कोई औचित्य ही नही है इसके पीछे सोच यही है कि कोई निम्न हिन्दू दक्षिण भारत की द्विज जातियों के विशय में किसी भी प्रकार का जोखिम लेना उचित नही समझता। Þ;gk rd fd fyxk;r lekt e fdlh dh eR;q ij Hky gh og ;qok] cPpk D;k u gk fyxk;r lekt d ykx gh erd d ?kj lonuk 0;Dr dju tk;x] erd dk dkbl xj fyxk;r fe= Hkh viu fe= d vfUre lLdkj e ugh tk;xkA vkj u tkuk pkgrk g D;kfd tkrh; ncko vkj mldk fn;k x;k lLdkj ,l ekdk ij pkgr g, Hkh ml "kkfey gku l jkdrk gA Bhd blh idkj l xkMk xkMk d ;gk] uk;dk uk;dk d ;gk n%[k vkj l[k dh ?kMh e tk;x fdlh vU; tkfr dk 0;fDr nljh tkfr d ;gk ugh tkrk gAÞ

nkg lLdkj&

रामपुरा गांव में जब मृत्यु के बाद दाह संस्कार प्रक्रिया पर साक्षात्कार और अवलोकन विधि से ज्ञान हासिल करने का प्रयास किया गया तो पता चला कि सभी जातियों मे चाहे वह लिंगायत हो अथवा नायका जनजाति अथवा गौड़ा सभी जातियों के दाह संस्कार की अलग–अलग भूमि निश्चित की गयी है। निर्धारित स्थान पर ही जातियां दाह संस्कार करती है। जाति आधारित बस्तियां, जाति आधारित दाह संस्कार स्थल, अलग–अलग खान–पान जैसे रामपुरा गांव अवलोकन के दौरान यह देखने को मिला कि जनजातियों में मदिरा मांस का सेवन अधिक मिला, जबकि गौड़ा में षराब का प्रचलन कम मांस मछली का प्रचलन अधिक विद्यमान है जबकि लिंगायतों में मांस मदिरा का प्रचलन न के बराबर है। खान–पान के आधार पर अगर देखा जाए तो दक्षिण भारतीय समाज विभक्त है।

उपर्युक्त तमाम विशेशताओं के आधार पर भले ही द्विज एवं निम्न जातियों के बीच दूरी हो परन्तु मृत्यु के बाद दाह संस्कार की प्रक्रिया में समानता देखने को मिली। जैसे सभी जातियां अविवाहित लड़के लड़कियों की मृत्यु के बाद कब्र में लिटाने के बाद अगर मृतक लड़की है तो उसके दाहिने वक्ष पर एक लड़के की मूर्ति लिटाकर रख दिया जाता है अगर मृतक लड़का है तो उसके बायें सीने पर एक लड़की की मूर्ति लिटा दी जाती है। ऐसी प्रक्रिया के पीछे मान्यता है कि लड़के लड़कियां बड़े होने पर (अगर छोटी उम्र में उनकी मृत्यु हुई तो) वैवाहिक सुख का आनन्द ले सकें। यही स्थिति अगर वयस्क

अविवाहित लड़के लड़कियों की मृत्यु हो जाती है तो तब भी दाह संस्कार की प्रक्रिया वही रहती है। उसके पीछे भी यह मान्यता है कि जब इच्छा हो तो दोनो दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें। यह प्रकरण इस ओर इंगित करता है कि भले ही शिक्षा और आधुनिकता के मामले में समाज आधुनिक हो (विशेशकर लिंगायत) परन्तु कुछ मामलों में आज भी पारम्परिक बना हुआ है। जैसा कि उपर्युक्त उदाहरण से स्पश्ट हो जाता है।

दाह संस्कार की प्रक्रिया के मामले में सभी जातियों में समानता है। दाह संस्कार के तीसरे दिन सभी जातियों (लिंगायत, गौड़ा, नायका व अन्य) में मृत्यु भोज किया जाता है। भोज प्रारम्भ करने से पहले मृतक की पसन्द का भोजन उसकी कब्र पर ले जाकर रखा जाता है ऐसा करने के पीछे भी मान्यता है कि मृतक भोजन का आनन्द ले सकेगा, भोजन रखने के बाद मृतक परिवार अपने रिश्तेदारों व अपनी जाति के लोगों को भोजन कराता है। इसी प्रकार से तीज त्यौहारों पर भी जातीय भागीदारी देखी जा सकती है। विशेश प्रयोजनों में जातिवाद मुखर होता हुआ देखा जा सकता है। स्थानीय व्यवसाय जैसे खेती किसानी, नारियल उत्पादन, पशुपालन इत्यादि में एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति के यहां चाहे वह लिंगायत ही क्यों न हो के यहां दिहाड़ी मजदूर अथवा सेवा के बदले वस्तु इत्यादि आधारों पर काम नही करती हैं। (यहां पूर्णतया जजमानी प्रथा विलुप्त प्राय हो चुकी है) बल्कि जो जाति स्वयं काम नही कर सकती वह ठेके पर अपना कृशि कार्य कराती है। ठेके की प्रथा में जातीय बन्धन देखने को नही मिलता क्योंकि अब दो जातियों के बीच एक ठेकेदार बिचौलिया होता है उसके साथ मजदूर लोग बिना किसी जातीय भेद–भाव के खेती आदि करते हैं और ठेकेदार से अपना पारिश्रमिक प्राप्त करते हैं (श्रमिक किसी भी जाति का हो सकता है उस पर द्विज जाति या किसी अन्य को कोई ऐतराज नहीं होता)। साधारणतया एक जाति दूसरी जाति विशेश की गली में दरवाजे पर जाने से बचती है। छुआछूत भेद–भाव आज भी दक्षिण भारत के गांवों की विशेशता है। ßijUrq vkSp;Z djus okyh ckr gS fd ckgj pkgs og ;k=h cl gks ;k fQj vU; dkbZ ljdkjh lkoZtfud LFky dgh ij Hkh Nqvk&Nwr n[kus dks ugh feyk cfYd =fVo'k fdlh dk iSj vxj fdlh ds Åij iM+ tkrk gS rks iSj Nwdj ekQh ekxus dh lLdfr u nf{k.k Hkkjr ds ykxks dks fdlh 0;fDr dks lEeku dh nf’V ls n[kus dks etcwj djrk gSAÞ स्त्रियों के श्रृगांर में जातिवाद नाम की चीज गुजरे जमाने की हो चुकी है क्योंकि स्त्रियों के श्रृगांर में कोई अन्तर देखने को नही मिला। परन्तु स्थानीय स्तर पर लोक संस्कृति में दक्षिण भारत जातीय भेद–भाव को लेकर बहुत ही संकीर्ण विचारधारा युक्त है। दक्षिण भारत जातिवाद पर गंभीर परिपालन के बावजूद भी वृहद स्तर पर वृहद परम्परा का संदेश देने वाला समाज है, क्योंकि स्त्री पुरुशों में (लैंगिक भेद–भाव) समानता सुख–सुविधाओं में भेद–भाव इत्यादि से ऊपर उठ चुका है। इसीलिए मैसूर जैसे स्थानों पर नारी सशक्तिकरण की झलक आसानी से देखी जा सकती है व महसूस की जा सकती है। एक दूसरे का सम्मान किसी भी समाज के विकास की गति को तीव्र करने का सूचक माना जाता है। दक्षिण भारत की ग्रामीण आर्थिक समृद्धि तेजी से जातीय दूरी को मिटाने में वह सफलता प्राप्त नही कर पायी है जो उसे पाना चाहिए। इसका

सबसे बड़ा कारण है जातिवादी राजनीतिक जहर का दक्षिण भारत के ग्रामीण व ष्ाहरी समाज पर छिड़काव। अभी हाल में लिंगायतों द्वारा बौद्ध धर्म धारण करने की अनुमति की मांग जोर पकड़ी थी इसका आखिर क्या अभिप्राय निकाला जाये इसके पीछे द्विज लिंगायतों का अन्य निम्न जातियों को सरकार द्वारा अधिक सरकारी सुख सुविधाओं को प्रदान किये जाने को लेकर एक प्रकार की जातिवादी संकीर्ण विचारधारा ही थी कि जब हम भी उस श्रेणी में ष्ाामिल हो जायेंगे तो मुझे भी इसका लाभ सरकार देगी, मांग का कारण यह न होकर सरकार को अन्य निम्न हिन्दू जातियों को दी जाने वाली सुविधाओं से रोकना मात्र था। 1940–50 के दशक में मैसूर नरसिम्हाचार श्रीनिवास के अध्ययन से पता चलता है कि द्विज जातियों की संस्कृति की नकल करते हुए निम्न हिन्दू जाति का कोई व्यक्ति पकड़ा जाता है तो उस पर अमानवीय व्यवहार किया जाता था। जैसे कि उसकी पिटाई करना, उसकी मूँछों को मुड़ा देना, पगड़ी को उतरवा देना इत्यादि। अब संवैधानिक संरक्षण और न्यायपालिका की सक्रियता, कार्यपालिका की द्रुतगति से काम करने की वजह से 1940–50 के दशक की घटना को दोहराने की हिम्मत जुटाने पर कानूनी कार्रवाही के भय से अब दक्षिण के द्विज जातियों का अल्पसंख्यक का दर्जा मांगकर सरकार पर दबाव बनाना मात्र निम्न हिन्दू जातियों, जनजातियों को अपने से आगे बढ़ने न देने की एक जातिवादी सोच का नतीजा मात्र कहा जा सकता है।

fu"d"k&

दक्षिण भारतीय समाज को आध्यात्म और आस्था वाला समाज कहा जाये तो अतिशयोक्ति न होगा। प्राकृतिक संपदा, कृशि संपदा से धनी समाज अगर छुआ–छूत, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाग्यवाद, खान–पान, तीज त्यौहार इत्यादि को लेकर अगर अपनी कठोर सीमा में बंधा रहेगा तो वह अन्य के लिए रोल मॉडल प्रस्तुत नही कर पायेगा। जहां की ग्रामीण सुख समृद्वि उत्तर भारत, पूर्वी भारत व अन्य भारत के ष्ाहरी इलाकों में बमुश्किल से देखने को मिलती है ऐसा समाज आज भी अपनी सदियों पुरानी परम्परा जो आज समाज को तोड़ने वाला यंत्र कहा जा सकता है को अपनी कांख में दबाये हुए है। क्या इस आधार पर दक्षिण भारतीय समाज को मानवता, विराट सोच, वैश्विकता के किस स्तर पर रखा जाये पशोपेश में डालता है। प्रजनन क्षमता, खून का रंग,शारीरिक बनावट, भाशा बोली सभी में समानता के बावजूद जातीय भेद–भाव छुआ–छूत आज किसी भी समाज को सभ्य कहलाने में बाधक का कार्य करता है। इससे सभी को सहमत होना होगा, इससे निपटने के लिए सभी को प्रयास करना होगा, हमें अपनी सोच/विचारधारा में तब्दीली लानी होगी, घटिया राजनीतिक चालों से सावधान रहना होगा स्वार्थी अराजक तत्वों को नियंत्रित करना होगा जो जातिवाद को अपना हथियार बनाकर आगे बढ़ने की जुगत में लगे हुए है।

l UnHk&

1. एम.एन.श्रीनिवास : आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं निबन्ध।
2. स्वयं का सर्वेक्षण।
3. साक्षात्कार।
4. दैनिक जागरण का लेख।